धार्मिक केंद्रबिंदु (Scripture Focus):

“क्योंकि हमारे परमेश्वर ने हमसे होरेब में एक वाचा-बन्धन किया।”
— व्यवस्थाविवरण 5:2 (ERV/HFV)

1. वाचा का अर्थ

हमारे प्रभु यीशु मसीह का नाम हमेशा के लिए धन्य हो।
हर नया दिन, जिसे परमेश्वर हमें देता है, यह सोचने का अवसर है कि हम उसके जीवित वचन पर ध्यान दें। आज का संदेश हमसे गंभीर और व्यक्तिगत प्रश्न पूछता है:
कौन उठा रहा है आपका वाचा-बन्धन?

शास्त्र में वाचा (berith) परमेश्वर और उसके लोगों के बीच एक पवित्र समझौता है। यह कोई मामूली वादा नहीं है, बल्कि एक बंधा हुआ, दिव्य संबंध है, जो रक्त द्वारा सील किया गया है। पुराने नियम में, परमेश्वर और इस्राएल के बीच वाचा मूसा के माध्यम से प्रकट हुई और इसे कबूतर की गठरी (Ark of the Covenant) के द्वारा प्रतीकित किया गया — जो परमेश्वर की उपस्थिति का एक दृश्य संकेत था।

“वहीं मैं तुमसे मिलूँगा, और उस वाचा की सिंहासन-सीट से…
मैं तुमसे उस सब पर चर्चा करूंगा जो मैं इस्राएल के लोगों को आज्ञा देने के लिए दूँगा।”
— निर्गमन 25:22 (ERV/HFV)

कबूतर की गठरी केवल एक धार्मिक वस्तु नहीं थी; यह पृथ्वी पर परमेश्वर का सिंहासन दर्शाती थी — स्वर्ग और मानवता के बीच मिलने का स्थान। इसके भीतर थे: कानूनी पट्टियाँ, आरोन की शाखा, और मन्ना का बर्तन (इब्रानियों 9:4) — जो परमेश्वर की वाचा की विश्वसनीयता और उसकी आपूर्ति का प्रतीक हैं।

2. परमेश्वर की व्यवस्था और चुने हुए वाहक

जब परमेश्वर ने इस्राएल को गठरी के बारे में निर्देश दिया, तो उन्होंने इसे स्पष्ट रूप से कहा। केवल एक ही गोत्र — लेवी गोत्र — गठरी उठाने के लिए चुना गया था। और उस गोत्र के भीतर, केवल आरन के पुत्र पुजारी ही इसे सीधे संभाल सकते थे।

“उस समय यहोवा ने लेवी की जाति को अलग किया ताकि वे यहोवा की वाचा की गठरी उठाएं, यहोवा के सामने खड़े हों, सेवा करें और

उसके नाम में आशीर्वचन दें।”
— व्यवस्थाविवरण 10:8 (ERV/HFV)

अन्य किसी को गठरी छूने या उसके अंदर देखने की अनुमति नहीं थी, अन्यथा वह मर जाता (गिनती 4:15,20)। यह कठोरता नहीं थी, बल्कि पवित्रता थी। परमेश्वर इस्राएल को यह सिखा रहे थे कि उनकी उपस्थिति को लापरवाही से नहीं लिया जा सकता; इसे सम्मान, आज्ञाकारिता और दिव्य व्यवस्था के साथ संभालना चाहिए।

3. दाविद का त्रुटि: अच्छे इरादे, गलत तरीका

सदियों बाद, राजा दाविद ने गठरी को यरूशलेम लाने की इच्छा जताई — एक महान और परमेश्वर-प्रिय इच्छा। वह ईश्वर से गहराई से प्रेम करता था, और उसके इरादे शुद्ध थे। लेकिन अपने उत्साह में, उसने गठरी उठाने के निर्धारित तरीके का पालन नहीं किया।

“और उन्होंने परमेश्वर की गठरी को एक नए रथ पर रखा और उसे अबिनादब के घर से बाहर लाए।”
— 2 शमूएल 6:3 (ERV/HFV)

दाविद ने नए बैलों द्वारा खींचे गए रथ का प्रयोग किया — शायद यह सोचकर कि आधुनिक तरीका अपनाने से परमेश्वर को अधिक सम्मान मिलेगा। यह दिखने में सुचारू और सम्मानजनक था, लेकिन परमेश्वर के स्पष्ट आदेश के विपरीत था।

कभी-कभी हमारे अच्छे इरादे खतरनाक हो जाते हैं जब हम दिव्य निर्देशों को नजरअंदाज करते हैं। आज्ञाकारिता के बिना पूजा स्वीकार्य नहीं है।

जब बैल ठोकर खाए, उस्सा ने गठरी को संभालने के लिए हाथ बढ़ाया — और तुरंत ही मारा गया।

“तब यहोवा का क्रोध उस्सा के विरुद्ध भड़क उठा, और परमेश्वर
ने उसे वहाँ उसके अपराध के कारण मार डाला, और वह गठरी के पास वहीं मर गया।”
— 2 शमूएल 6:7 (ERV/HFV)

दाविद स्तब्ध और भयभीत हो गया। उत्सव रुक गया। उसने गठरी को ओबेद-एदोम के घर में रखा, जहाँ यह तीन महीने तक रही। इस दौरान परमेश्वर ने ओबेद-एदोम के घर को समृद्धि से आशीर्वाद दिया (2 शमूएल 6:11)।

दाविद ने अंततः समझा: समस्या गठरी में नहीं थी, बल्कि उसकी अवज्ञा में थी।

4. परमेश्वर की व्यवस्था में लौटना

शास्त्र को देखने के बाद, दाविद ने सत्य पाया:

“क्योंकि तुमने इसे पहली बार नहीं उठाया, हमारे परमेश्वर यहोवा ने हम पर क्रोध किया, क्योंकि हमने उसे नियम के अनुसार नहीं खोजा।”
— 1 इतिहास 15:13 (ERV/HFV)

उसने पश्चाताप किया, लेवी को इकट्ठा किया, उन्हें पवित्र किया, और उन्हें गठरी को खंभों पर कंधों पर उठाने का आदेश दिया, जैसा कि मूसा ने यहोवा के वचन के अनुसार आदेश दिया था (1 इतिहास 15:15)।

तभी गठरी सुरक्षित रूप से यरूशलेम पहुँची, पूजा, बलिदान और आनंद के साथ।
सच्चा आध्यात्मिक उत्थान हमेशा दिव्य व्यवस्था में लौटने के बाद आता है।

5. उज़ियाह का घमंड: जब उत्साह विद्रोह बन जाए

एक और राजा, उज़ियाह, इस सिद्धांत को दिखाता है। परमेश्वर ने उसे सफलता और शक्ति से आशीर्वाद दिया क्योंकि उसने “यहोवा को ज़कार्याह के दिनों में खोजा” (2 इतिहास 26:5)। लेकिन जब वह मजबूत हुआ, तो घमंड ने उसके हृदय को भर दिया। वह मंदिर में गया और अगरबत्ती जलाने का प्रयास किया — जो केवल पुजारियों के लिए निर्धारित था।

अस्सी साहसी पुजारियों ने चेतावनी दी, लेकिन उसने नहीं सुनी। तुरंत ही परमेश्वर ने उसे कुष्ठरोग से मार डाला, और वह मृत्यु तक अलग-थलग रहा (2 इतिहास 26:16–21)।

उज़ियाह का पतन याद दिलाता है कि ईमानदारी आज्ञाकारिता की जगह नहीं ले सकती। परमेश्वर का कार्य परमेश्वर के तरीके से होना चाहिए।

6. नया वाचा और हमारा उच्च पुरोहित

अब, नए वाचा के तहत, हम लकड़ी और सोने की गठरी नहीं उठाते। वाचा अब हृदय में आत्मा द्वारा लिखा गया है (यिर्मयाह 31:33)। लेकिन वही सिद्धांत लागू होता है: केवल परमेश्वर द्वारा चुना

गया व्यक्ति ही वाचा को उसकी उपस्थिति के सामने उठा सकता है।

वह एक है यीशु मसीह, हमारा अनन्त उच्च पुरोहित।

“इसलिये हमारे पास अब एक महान उच्च पुरोहित है, जो स्वर्गों से होकर गया है, यीशु, परमेश्वर का पुत्र; तो हम अपने
विश्वास के कथन में दृढ़ रहें।”
— इब्रानियों 4:14 (ERV/HFV)

“क्योंकि वह एक बेहतर वाचा का मध्यस्थ है, जो बेहतर प्रतिज्ञाओं पर आधारित है।”
— इब्रानियों 8:6 (ERV/HFV)

पुराने वाचा में लेवी ने लोगों के सामने गठरी उठाई। नए वाचा में, मसीह हमें पिता के सामने ले जाते हैं। वह हमारे लिए प्रार्थना करते हैं (रोमियों 8:34) और उनका रक्त हाबिल के रक्त से बेहतर बातें कहता है (इब्रानियों 12:24)।

वह अकेले परमेश्वर की उपस्थिति में जाने का मार्ग है (यूहन्ना 14:6)।
जब मसीह नेतृत्व करते हैं, तो वाचा सुरक्षित रहता है; जब हम

उन्हें मानव संस्थाओं या परंपराओं से बदलते हैं, तो हम दाविद के रथ जैसा संकट झेल सकते हैं।

7. जब धर्म संबंध की जगह ले ले

आज, कई विश्वासियों ने अनजाने में दाविद की गलती दोहराई है। वे अपने संप्रदाय, परंपराओं या नेताओं को मसीह के ऊपर रखते हैं — संगठनात्मक शक्ति पर भरोसा करते हैं, न कि दिव्य सत्य पर।

हम कहते हैं कि हम यीशु से प्रेम करते हैं, लेकिन अक्सर हमारी निष्ठा हमारी चर्च व्यवस्था से होती है, न कि उनके वचन से।

“ये लोग अपने होंठों से मुझे सम्मान देते हैं, परन्तु उनका हृदय मुझसे दूर है। वे व्यर्थ पूजा करते हैं; उनके उपदेश
केवल मानव आदेश हैं।”
— मत्ती 15:8–9 (ERV/HFV)

यदि हम संप्रदाय की शिक्षाओं का पालन करते हैं बजाय शास्त्र के — पाप, पश्चाताप, पवित्रता या बपतिस्मा के बारे में — हम “बैल” को वाचा खींचने देते हैं। यह थोड़े समय के लिए स्थिर दिख सकता है, लेकिन बैल अंततः ठोकर खाएंगे।

धर्म बिना मसीह के विफल होगा। चर्च की सदस्यता बिना नई जन्म के व्यर्थ है। संस्कार बिना आत्मा के खाली हैं।

8. सच्चे आज्ञाकारिता के लिए आह्वान

प्रिय विश्वासि, परमेश्वर हमारी बाहरी गतिविधियों, उपाधियों या धार्मिक ऊर्जा से प्रभावित नहीं होते। जो वह चाहता है, वह सरल आज्ञाकारिता और हृदय से विश्वास है।

“आज्ञाकारिता बलिदान से बेहतर है, और सुनना भेड़ों के चर्बी से।”
— 1 शमूएल 15:22 (ERV/HFV)

आज ही पश्चाताप करें।
यीशु मसीह को अपने उच्च पुरोहित के रूप में आगे जाने दें। परमेश्वर के वचन को अपने मार्गदर्शक के रूप में अपनाएँ, न कि आपकी परंपरा या संप्रदाय।

वचन का पालन करें। वचन के अनुसार जियें। वचन से प्रेम करें। यहीं एकमात्र सुरक्षित मार्ग है — क्योंकि परमेश्वर हमेशा अपने वचन के अनुसार कार्य करता है, मानव विचारों के अनुसार

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 9

नहीं।

“हे प्रभु, तेरा वचन आकाश में सदा स्थिर है।”
— भजन 119:89 (ERV/HFV)

मनुष्य के सभी शब्द झूठे हों, पर परमेश्वर का वचन सत्य हो (रोमियों 3:4)।

निष्कर्ष

आज कौन उठा रहा है आपका वाचा-बन्धन?
क्या यह आपकी चर्च, परंपरा, या नेता हैं — या केवल मसीह?

जब प्रभु आपको देखेंगे, तो उन्हें यीशु मसीह आपके आगे चलते हुए दिखाई दें — जो अपने रक्त से आपका वाचा उठाते हैं और पिता के सामने आपके लिए मध्यस्थता करते हैं।

केवल तब आप कृपा, व्यवस्था और दिव्य कृपा में सुरक्षित रूप से चल सकते हैं।

आप पर बहुत आशीर्वाद हो।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp